प्रातःक्लास 3.4.68 ओमशान्ति। शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। जहां–तहां लिखा हुआ है शिवबाबा को याद करो। फिर उससे क्या होगा, यह भी लिखना पड़े। शिवबाबा को याद करने से ही सभी पाप कट जाते हैं और पुण्यात्मा बन जाते हैं। मनुष्यों की बुद्धि में यह नहीं है कि हम कैसे पापात्मा बन गये हैं। तुम बच्चों को तो बाप ने समझाया है तुमने बहुत–2 पाप किये हैं और तुमको भी ड्रामा के प्लैन अनुसार निश्चय होता है बरोबर जबकि हम ही पहले–2 वाममार्ग में गये हैं तो हम ही पापात्मा बने हैं। रावण राज्य में पहले–2 देवताएं ही वाममार्ग में गिरे हैं। यह बाप ने समझाया है। यह भी कुछ न कुछ आटे में लून जैसे निशानियां हैं। अभी बाप डायरैक्शन देते हैं पापात्मा से पुण्यात्मा बनने। कहते हैं याद की यात्रा में रहो अथवा योग लगाओ। योग भी स्त्री अथवा पुरुष दोनों को ही लगाना है ; क्योंकि यह तो प्रवृत्तिमार्ग है ना। यह बातें क्लीयर कर समझानी हैं। यह योग है ही प्रवृत्तिमार्ग का। योग कायदे अनुसार लगेगा भी उन्हों का। फ़र्क तो बहुत बतलाया है। तुम मुझसे योग लगाते हो , वह रहने के स्थान से योग लगाते हैं। यह भी बच्चे समझते हैं हम कभी भी ब्रह्मा से योग नहीं लगाते ,न लगाया है ,न कभी साधु–संत के कहने से भी लगा सकते हैं। उनको तो क्लीयर समझाना होता है। बाप से योग लगाने से सुख का वर्सा मिलेगा। बच्चों को खुशी होती है। वह तो सुख के अनुभव को जानते ही नहीं। तुमको समझाया जाता है। तुम सुख के अनुभव को जानते हो। तुम हरेक धर्म को, सारी दुनियां को समझते हो। आदि, मध्य, अंत को जान गये हो। तुम्हारी बुद्धि में पहचान है। जानते हो फलाने–2 धर्म वाले इतना ज्ञान उठा नहीं सकेंगे। हमको भारतवासियों को ही देना है। वह बाप को अच्छी रीत जानते हैं। तुम्हारे पास म्यूज़ियम अथवा प्रदर्शनी में आते तो बहुत हैं। म्यूज़ियम में आते ही आते हैं। प्रदर्शनी में कितना तुम खर्चा करते हो तो भी इतनी रिज़ल्ट नहीं निकलती है। म्यूज़ियम में एक ही बार खर्चा होता है। फिर रिमाइन्डर भेजते रहो। पर्चों में भी ऐसे लिखो। शिवबाबा को याद करो। भगवानुवाचः मामेकं याद करने से तुम्हारे जन्म–जन्मांतर के विकर्म भस्म हो जावेंगे। अभी तुम्हारा काम है सभी को रास्ता बताना। यह तो जानते हो बाप रास्ता बताते हैं। तुम भी औरों को रास्ता बताते हो। मैसेज पहुंचाते हो। बाकी सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है यह तो कॉमन बात है। मनुष्यों ने लाखों वर्ष लगा दिया है। तो कोई भी बात स्मृति में नहीं आती है। तुमको स्मृति में आता है। बाप ने 84 लाख का चक्र भी समझाया है। और कब कोई 84 जन्मों का राज़ समझाते ही नहीं। वह सभी है भक्तिमार्ग। बच्चे जानते हैं भक्ति क्या, ज्ञान क्या है। भक्तिमार्ग वाले भक्ति ही सिखलाते हैं। अभी तुम हो नये ज्ञान के धर्म वाले। तुम भक्त नहीं हो। तुमको बाप आकर के सद्गति का रास्ता बताते हैं। पढ़ाते हैं। बेहद का बाबा, बाप भी है, टीचर भी है। नॉलेज भी देते हैं सृष्टि के आदि, मध्य, अंत की। सीढ़ी कैसे उतरते और चढ़ते हो यह तुम्हारी बुद्धि में है। सतयुग से उतरते–2 कलयुग में आये हैं। फिर अभी सीढ़ी चढ़ते हो योगबल से। वह है भोगबल जिससे सीढ़ी उतरते हो। चीदे–2 अक्षर नोट करनी चाहिए। तुम्हारे म्यूज़ियम में थोड़े–2 आते हैं, वह अच्छा है। बहुत मनुष्य आये इसमें खुश न होना है। तुमको हर–बर(हड़बड़) लगती है बहुत आवें। बाप कहते हैं भल थोड़े आवे, तुमको बहुत धीरे–2 समझाना चाहिए। मनुष्य ही समझ सकेंगे। जनावर तो सृष्टि के आदि, मध्य, अंत को नहीं जानेंगे। पढ़ाई मनुष्यों के सिवाय और कोई तो पढ़ते ही नहीं। पढ़ाई को भी सिद्ध करना है। बाप एमऑब्जेक्ट बतलाते हैं। मैं तुमको राजाओं का राजा डबल सिरताज बनाता हूं। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। सिर्फ़ क्यो करो? बहनों और भाईयों अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। परमात्मा और आत्माओं का मेल भी अभी बरोबर है। जैसे तुम शरीर में हो बाप भी कहते हैं मैं शरीर में आता हूं। तुम उनको ही याद करते हो। उनसे ही सुनते हो। जो भी पहले आते हैं उनसे फॉर्म भी भराना है। बिगर फॉर्म भी तुम पूछ सकते हो। बाप कितने है? एक होता है लौकिक बाप , दूसरा होता है पारलौकिक बाप। पारलौकिक है आत्माओं का बाप। जब आत्मा आकर माता के गर्भ में प्रवेश करते हैं तो फिर म(म्)मा कहना पड़े। बाबा को भी याद

करते हैं। फिर निराकार को भी ज़रूर याद करते हैं। अभी तुम जानते हो बाप साकार में आये हैं। कल्प पहले भी आया था। राजयोग की पढ़ाई पढ़ाई थी। यह पढ़ाई है ना। और कहां भी एमऑब्जेक्ट है नहीं। तुम बच्चे जानते हो यह है सच्ची गीता पाठशाला। यहां तुम मनुष्य से देवता बनते हो। उनमें भी नम्बरवार हैं ना। कौन सो देवता बने? मुख्य है तो यह ल.ना.। यह बनने की एमऑबजेक्ट है। नर से नारायण बनना है। इतना ऊँच बनाने वाला तो बाप ही है। नर से नारायण डबल सिरताज, फिर नर से नारायण सिंगल ताज वाले भी हैं तो बिगर ताज भी हैं। बहुत राजाओं का नाम ल.ना. होता है। पवित्र राजाओं का वही नाम तो अपवित्र राजाओं के (भी) वही नाम। मुख्य है यह ल.ना. जिनको ही भगवान–भगवती कहते हैं। ज़रूर उन्हों को भगवान ने ही राज्य दिया होगा। भगवानुवाचः मैं तुमको राजयोग सिखाता हूं। ऐसे तो नहीं कोई ने भी सिखाया। कृष्ण वा फलाने ने। ज्ञान देने वालो(ला) तो एक ही है बाप और एक ही टीचर है। पहले–2 तो निश्चय बुद्धि चाहिए। ऐसे सिर्फ़ कहना है शिवबाबा को याद करो। इससे भी समझेंगे नहीं। जब तक दो बाप का परिचय दो। शिव का चित्र ही अलग है। कृष्ण का बिल्कुल अलग है। कृष्ण को कहेंगे रचना। वह रचयिता। बच्चों को बाप का परिचय चाहिए। बाप शिव परमपिता परमात्मा है। वह है सभी आत्माओं का पिता। पहले–2 बच्चों को माथा ही इस पर मारना है शिव के चित्र के आगे। उनकी महिमा सहज समझाना है। ऊँच ते ऊँच वही भगवान है। गाया भी जाता है। ''सगल समग्री तुमरे शुतरधारी''.....सूतर में सभी दाने मोती रुण्ड माला के पिरोये हुये हैं। रुद्रमाला कितनी बड़ी माला है। 5000 करोड़ मनुष्य हैं। कितनी बड़ी रुद्रमाला है। सभी की सद्गति भी करते हैं। कैसे करते हैं वह तुमको समझाना है। इस समय तो सभी दुर्गति में हैं। तब तो सद्गति का नाम निकालते हैं। गति–सद्गति, मुक्ति–जीवनमुक्ति यह नाम अभी ही निकलती है। सद्गति में नहीं निकलती। सद्गित देने वाला एक ही बाप है। तुम एडॉप्ट होते हो। साकार प्रजापिता ब्रह्मा से फिर पढ़ाई मिलती है। जिससे तुम विष्णुपुरी के मालिक बनते हो। विष्णु के माला में पिरोये जाते हो। विष्णु को बाप नहीं कहेंगे। विष्णु से ही वैष्णव अक्षर निकला है। विष्णु से दो रूप निकले हैं। यह है सम्पूर्ण निर्विकारी। वैष्णव निर्विकारी को कहा जाता है। वैष्णव कब विकार में नहीं जाते, हिंसा नहीं करते। वैष्णव के राज्य में तो देवताएं ही होते हैं। देवताओं की लड़ाई हो न सके। वहां राज्य ही एक है। देवताओं कोर(और) दैत्यों की लड़ाई है नहीं। देवताएं सतयुग में होते हैं। वह तो कब लड़ते नहीं। लड़ाई इस समय तुम पाण्डवों की है माया से अथवा असुरों से। असुर भी 5 विकार हैं। जिनमें 5 विकार हैं उनको असुर कहा जाता है। यह तो तुम क्लीयर समझा सकते हो। अभी रावण राज्य है। हर वर्ष मारते ही रहते हैं। पहले–2 तो यह सिद्ध करना है। दो बाप हैं। एक है लौकिक ,दूसरा है पारलौकिक। अभी पारलौकिक बेहद के बाप को याद करना है। वह बाप है ही नई विश्व का रचयिता। उनको याद करने से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और स्वर्ग का वर्सा मिलेगा। यह है वसीकरण मंत्र। बाप कहते हैं मामेकं याद करो और पवित्र बनो। काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से तुम जगत जीत बनेंगे। जो सर्विस पर बच्चे रहते हैं उन्हों की बुद्धि में ऐसी–2 खयालात चलती है। अनेक प्रकार से समझाने लिए प्वाइन्ट याद रहती है। जो सर्विस ही नहीं करते उन्हों को तो प्वाइन्ट्स याद भी नहीं रहती। पढ़ाई में कोई कच्चे, कोई पक्के तो होते ही हैं। जो जितना पुरुषार्थ ज़ोर से करेंगे वह उतना अडोल–अचल रहेंगे। माया उनको हिलावेगी नहीं। अन्दर में आता तो है ना। माया के तूफान भल कितना भी हिलावें; परन्तु हम अडोल रहेंगे। वह पिछाड़ी की अवस्था होनी है। विनाश के बाद। बाप तो कहते हैं बिल्कुल सहज समझानी दी जाती है। तूफान भल कितने भी आयें उनसे डरना न है। आँखें भी बड़ा धोखा देती हैं; इसलिए बाबा कहते हैं अपन को आत्मा समझने से दूसरे को भी आत्मा देखेंगे। कोई धोखा नहीं आवेगा। यह है पिछाड़ी की कर्मातीत अवस्था। फिर भाई–बहन की अवस्था भी पक्की हो जावेगी। हम आत्मा हैं। फिर शरीर का भान ही नहीं रहता। जितना तुम

बाप को याद करेंगे उतना ही शारीरिक सम्बन्ध निकलता जावेगा। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप तो कह सकते हैं यह कितना पुरुषार्थ करते हैं। सभी ब्राह्मण जा सकते हैं। बाबा अभी भी कहें सभी बच्चे क्लास में मिलकर बताओ रुद्रमाला के कौन–2 लायक बने हैं। इस समय तो भी बाबा के पास रेसपॉन्स आ जावेगा। जो समझदार होंगे। ऐसे–2 हम नहीं नाम निकालेंगे तो नाम बदनाम होगा। नहीं। यह तो बाबा डायरैक्शन देते हैं ना। शुरू से लेकर समझाते रहते हैं। तुम भी समझते रहते हो। समझकर फिर औरों को समझाते हो। बाप बूढ़े ऑरगन्स का आकर लोन लेते हैं। बूढ़से(बूढ़े)को खांसी होती है। इनके ऑरगन्स को खांसी होती है। यह तो पुरानी साथी है। अभी बच्चों को चक्र का राज़ तो समझाया है। बाप को याद करना है और चक्र को याद करना है। फिर से समझाते रहते हैं। नया कोई आता है तो उनको भी यही समझाना है। दो बाप है ना हद का और बेहद का। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है भविष्य 21 जन्मों लिए। सो भी मिलेगा ज़रूर संगम पर। यह सम(झा)ने में कोई डिफीकल्ट बात नहीं है; परन्तु पतीर(पतित) बुद्धि मनुष्य इतनी सहज बात भी समझ नहीं सकते हैं। यह तो कोई भी कहेंगे दो बाप तो बरोबर है। समझाना भी मनुष्यों को होता है। बाप ही आकर के समझाते हैं। राजधानी स्थापन होती रहती है। बेहद का बाप, परमपिता–परमात्मा तो एक ही है। ऐसे नहीं सभी आत्माओं को परमात्मा कहेंगे। नहीं। परमात्मा तो एक ही है। वही सिखलाने लिए निमित्त है। क्रियटर भी उनको कहेंगे। नई दुनियां क्रियेट करते हैं। एडॉप्शन के सिवाय तो नई दुनियां क्रियेट हो न सके। प्रजापिता ब्रह्मा तो सभी का पिता है। उसकी वाइफ कोई है नहीं। योगबल से रचना होती है। तुमको योगबल से एडॉप्ट किया जाता है। वह है लौकिक यह है पारलौकिक। लौकिक बाप से तो हद का वर्सा मिलता है। वह भी ले सकते हैं , न भी ले सकते हैं। वर्सा देने वाला मर जाता है। बच्चे बहुत हैं आपस में ही झगड़ा हो जाता है। यहां तो ढेर बच्चे हैं। कोई का भी प्रॉपर्टी के लिए झगड़ा नहीं। यह प्रॉपर्टी सभी को मिलती है पढ़ाई से। पढ़ाई से प्रॉपर्टी सिर्फ अभी ही मिलती है। पारलौकिक बात(प) एक ही है। बाकी तो सभी हैं उनके बच्चे। एक बाप से क्या प्रॉप्र्टी मिलेगी? नई दुनियां। नई दुनियां का रचता है। नई दुनियां का रचता है राम। पुरानी दुनियां का रचयिता है रावण। यह भी सहज समझाने की बातें हैं। वह तो सभी हद की बातें हो गईं। वह है विकारी बाप, यह है निर्विकारी बाप। सतयुग में रावण का नाम ही नहीं होता। वह है ही दैवी दुनियां। बाप समझाते हैं बाद में रावण राज्य होता है तो तुम्हारी चलन भी आसुरी हो जाती है। सराप जिसका मिलता है उनका गीत थोड़े ही गाया जाता है। रावण का गीत कब कोई गावेंगे? उनकी कुछ भी महिमा नहीं करेंगे। हां, बाप की महिमा गाते हैं। यह सभी बातें बाप ही इस समय बैठ समझाते हैं। बाप नहीं है तो सभी भक्ति में ही लगे रहते हैं। तुम भी भक्ति में थे। अभी मालूम पड़ा है। वह कोई ज्ञान नहीं है। वह सभी है भक्ति। ज्ञान से सद्गति रूपी दिन बन जाता है। भक्ति सो होती है रात। शास्त्रों में भी है ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात। माना ब्राह्मणों का दिन और रात। बड़ी महिमा तो ब्राह्मणों की है। अभी है संगम। न रात ,न दिन। उनको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगमयुग के ब्राह्मण। इनका किसको भी पता नहीं है। ब्राह्मणों का यह संगम पर ही कुल होता है। पुरुषोत्तम बनने का यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। बाकी नीचे उतरने वाले युग का तो नाम भी नहीं लेते हैं। पुरुषोत्तम संगमयुग की ही महिमा है। जबकि पुरानी दुनियां चेंज होती है। किसको भी पुरुषोत्तम संगमयुग याद रहे तो भी अच्छा है। हम पुरुषोत्तम अर्थात् देवता बन रहे हैं। पुरुषोत्तम संगमयुग होने कारण पास्ट और फ्युचर होता है। पास्ट में हम कलयुग रावण राज्य में थे। फ्युचर में हम पुरुषोत्तम बनते हैं। कैसे, बाप को याद करते–2 चक्र फिराते हम स्वदर्शन चक्रधारी बन जाते हैं। मुख्य बात तो दो बाप की समझानी है। जब कोई दुःख होता है तो हे ईश्वर, हे भगवान, ओ गॉडफादर कहते हैं ना। दुःख में उनको ही याद किया जाता है। यह है दुःख

की दुनियां। तुम सभा में भी समझा सकते हो। स्त्री वा पुरुष दोनों को दो बाप हैं। लौकिक और पारलौकिक। ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जो हे ईश्वर, हे प्रभु, हे परमपिता नहीं कहेंगे। लौकिक बाप को तो भगवान नहीं कहेंगे। भगवान को हम याद करते हैं। जानते हैं वह है स्वर्ग का रचयिता। वह तो ज़रूर हमको स्वर्ग का मालिक बनावेगा। स्वर्ग के मालिक थे। फिर कैसे बनते हैं। सिर्फ़ कहते हैं बाप को याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। तकलीफ़ ही थोड़ी है। प्रदर्शनी वा प्रभातफेरी करने से किसको एकान्त में बिठाये समझा न सकेंगे कि दो बाप है। हां, भाषण में समझाते होंगे। हम नई–2 बात नई दुनियां के लिए समझाते हैं। यह पुरानी दुनियां खतम होनी है। विनाश तो सामने खड़ा है। नई दुनियां के लिए ज़रूर बेहद का बाप चाहिए। एक बाप ही नई दुनियां स्थापन करने वाला है। उनका वर्सा आधा कल्प मिलता है। फिर रावण के आने से पुरानी सृष्टि हो जाती है। नई सृष्टि बाप के मत पर होती है। पुरानी सृष्टि रावण के मत पर होती है। रावण की मत से असुर बनते हैं। बाप की मत से देवता बनते हैं। 84 जन्मों का भी हिसाब चाहिए ना। भाषण भी जब करते हो तो टॉपिक्स के लिस्ट हाथ में हो। पहले तो एकान्त में रहना होता है। अपने स्वधर्म में टिको। आत्मा तो शान्त रूप है। शान्तिधाम से यहां आती है पार्ट बजाने। आत्मा है ही शान्त स्वरूप। फिर आस्ते–2 अशान्त होती है 84 जन्मों बाद। सतयुग/त्रेता में शान्ति रहती है। शान्ति का सागर बाप आकर वर्सा देते हैं। फिर विकारों में फंसने से अशान्त हो जाते हैं। फिर आकर बाप शान्ति स्थापन करते हैं। शान्ति स्थापन करने वाला बाप रचयिता ही है। अशान्ति स्थापन करने वाला रावण रचना है। तुम बच्चों को भी समझाने में टाइम तो लगता है ना। कल्प–2 समझाते आये हैं। यह भी जानते हैं जो पास्ट हुआ फिर ज़रूर होगा। ड्रामा में नूँध है; इसलिए कोई बात में संशय की बात ही नहीं। ड्रामा अनुसार एक्युरेट ही होता है। ड्रामा की रिपीटेशन है तो कुछ भी संशय नहीं होगा। कोई भी चला जाये संशय नहीं। कल्प पहले भी यही पार्ट बजाया था। ड्रामा है ना। जो कुछ होता है ड्रामा अनुसार ही होता है। जानते हैं हर बात में कल्याण ही कल्याण है। यह है ही कल्याणकारी युग। जो कुछ होता है कल्याण के लिए होता है। हमको फ(भ)टकने की दरकार नहीं। भक्तिमार्ग वाले कलयुगी मनुष्य फ(भ)टकते हैं। मोह होता है। यहां तो मोह निकल जाता है। कोई–2 को पति तंग करते हैं तो अन्दर में कहतीं हैं कहां इनके प्राण निकल जायें तो हम छूटें। फिर और सम्बन्धी भी कितना तंग करते हैं। पति गया तो स्त्री स्वतंत्र होता(नी) चाहिए; परन्तु यहां तो फिर और सम्बन्धी भी बन्धन डालने लग पड़ते हैं। बहुत बन्धन आते हैं अनेक प्रकार के। इन बन्धनों से पार होने में टाइम लगता है। बच्चों को तो अपार खुशी होनी चाहिए। राजधानी स्थापन हो रही है। देखते हैं जो सर्विस करते हैं उनको खुशी भी रहती है। जैसे बाबा अपकारियों पर उपकार करते हैं तुम सभी को उपकार करना है। बाबा ऐसे नहीं कहते हैं कि जल्दी–2 हो जाये, नहीं। तुम सर्विस करते रहो। ड्रामा बिल्कुल जूं मिसल चलता रहता है। तुम फिक्र से फ़ारग रहो। फॉलो फाद(र)। ड्रामा में जिस समय जो नूँध है वह होता है। कोई का शरीर छूटना है, धरती हिलती है, ड्रामा का पार्ट चल रहा है। इस निश्चय में तो अडोल, अटल रहना है। कोई भी फ़िकरात की बात नहीं। यह तो पक्की गैरन्टी दिल अन्दर बांध लो। एक स्वीट फादर को ही याद करना है और सर्विस करनी है। उठते–बैठते, चलते–फिरते गृहस्थ व्यवहार में रहते बाप को याद करना है। दुकान में धंधा आदि करते भक्ति में देवता(ओं) को याद नहीं करते हैं। हनुमान के पुजारी होंगे तो चित्र रख देते हैं। अभी बाप कहते हैं और संग तोड़ एक को याद करो। कितना सहज है। अच्छा मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार। दीदी नम्बरवार कहें? स्वर्ग में तो सभी जाने वाले हैं। तो फिर नम्बरवार क्यों कहें? पढ़ाई में नम्बरवार तो होते ही हैं। अच्छा, मीठे–2 बच्चों को याद (प्यार) नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार गुडमॉर्निंग और नमस्ते। ओमशान्ति।